शिक्षा समस्त अच्छे और बुरे अनुभवों का सारः प्रो. अरविंद झा

कोलकाता, 13 जुलाई 2015। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अरविंद के झा ने कहा है कि शिक्षा कुछ और नहीं, समस्त अच्छे और बुरे अनुभवों का सार है। प्रो. झा आज विवि के कोलकाता केंद्र में चारों नियमित पाठ्यक्रमों- एमए हिंदी, एमए जनसंचार, एमफिल हिंदी तथा पीएचडी जनसंचार का सत्रारंभ कर रहे थे।

सत्रारंभ व्याख्यान देते प्रो. अरविंद झा। उनके दाएं डा. अमित राय और बाएं डा. कृपाशंकर चौबे और पूजा शुक्ल

'शिक्षा की समझ और समझ की शिक्षा' पर व्याख्यान देते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षा स्वयं को सोचने और स्वयं को बदलने की शक्ति देती है। प्रो. झा ने कहा कि शिक्षा के चार सोपान हैं- अनुभव, ज्ञान, सोच और परिवर्तन। समझ वह है जो नए विचारों को जन्म दे। शिक्षा व समझ के संबंध को समझने के लिए शिक्षा, समझ व ज्ञान के त्रिकोण को समझना आवश्यक है। शिक्षा व्यक्ति की समझ व ज्ञान को परिष्कृत करती है और समझ के आधार पर ज्ञान का क्रमशः विकास होता है और इन तीनों की संचालक शक्ति है-कर्म। इस अवसर पर एम.फिल की छात्रा नेहा गुप्ता ने कहा कि सिर्फ अपने काम से काम रखना निजी स्वार्थ है। मनुष्य एक सामाजिक

प्राणी है और वह सिर्फ अपने काम से काम नहीं रख सकता। कार्यक्रम का संचालन कोलकाता केंद्र के प्रभारी/ एसोसिएट प्रोफेसर डा. कृपाशंकर चौबे ने किया। धन्यवाद ज्ञापन असिस्टेंट प्रोफेसर डा. अमित राय ने किया।

शामियाने की तरह है भारतीय साहित्यः केदारनाथ सिंह

कोलकाता, 15 जुलाई। हिंदी के विशिष्ट साहित्यकार डा. केदारनाथ सिंह ने कहा है कि भारतीय साहित्य शामियाने की तरह विशाल है। वह एक नहीं है। भारतीय साहित्य के अंतर्गत अनेक भाषाएं आती हैं। डा. सिंह महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में भारतीय साहित्य की अवधारणा पर विशेष व्याख्यान दे रहे थे।

कोलकाता केंद्र में विद्यार्थियों को आटोग्राफ देते डा. केदारनाथ सिंह

डा. सिंह ने कहा कि देश में जितनी भाषाओं में साहित्य लिखा जाता है, वह भारतीय साहित्य है। दूसरे शब्दों में कहें तो भारतीय साहित्य एक है जो अनेक भाषाओं में लिखा जाता है। यहां एक और अनेक पर ध्यान दिया जाना चाहिए। भारतीय साहित्य की अवधारणा के संदर्भ में अनेकता के तत्व को खोजना महत्वपूर्ण है। इस अनेक शब्द में भारतीय साहित्य का सार छुपा हुआ है। डा. सिंह कोलकाता केंद्र में दिनभर विद्यार्थियों के साथ रहे। उन्होंने विद्यार्थियों के पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भी दिए।